नारा पुरखों का

आर्यभट्ट ने सूर्य पृथ्वी के सम्बंधों को दर्शाया
भास्कराचार्य की गणित संहिता को दुनिया ने अपनाया
कूटनीति और राजनीति में कौटिल्य सबसे आगे
कल्हण के इतिहासों से सोये हुए अतीत जागे
चरक ऋषि की औषधियों से स्वस्थ रहे हरदम तनमन
पाणिनि के सूत्रों के बल पर भाषाओं का हुआ सृजन
इन पुरखों के होंठों पर उपजा था नारा 'जय विज्ञान'
दुनिया के विकसित देशों में, खड़ा था भारत सीना तान

भारत के इस स्वर्णिम युग का भी समय अंतिम आया
नालंदा का हुआ विनाश, अज्ञान का सन्नाटा छाया
आए राजा पंडित आदि, महारथी लाखों सैनिक
शताब्दियाँ पर बीत गयीं, न जन्मा कोई वैज्ञानिक
पिछड गए, हो गया पतन, ढह गये वे सारे बुद्धि के धाम
कोहरे में खोये भारत को विदेशियों ने किया ग़ुलाम
धनवानों में थी गिनती, अब दरिद्रता का था अपमान
बन गए हम बाज़ार विश्व का, बेचते सिर्फ़ कच्चा सामान

नये उदय में विश्वेश्वर ने सँवारे किसानों के जीवन
स्वामिनाथन की हरित क्रांति से हुआ राष्ट्र खाद्य सम्पन्न
सी वी रामन के परीक्षणों ने किरणों पर प्रकाश डाला
बोस आचार्य ने रेडियो का किया आविष्कार निराला
चंद्रशेखर की सीमा के अंदर रहे ब्रह्माण्ड अपार
हरगोबिंद की चिकित्साओं पर, सदा रहे जग का आभार
कठिन दिनों में इन ऋषियों ने, जमकर लिया था अब यह ठान
देश बने भंडार ज्ञान का, लें हम भी नोबेल सम्मान

राष्ट्र हुआ स्वतंत्र, विकास के राह खड़ी थीं बाधाएँ
शांति भटनागर ने अनुसंधान हेतु बनाईं संस्थाएँ
लौट आए भाभा विदेश से, परमाणु की दी शक्ति
रामण्णा चिदम्बरम आदि ने कार्य को दी पूर्ण भक्ति
साराभाई ने देखा सपना, अंतरिक्ष द्वारा प्रगति
धवन, कलाम, ब्रह्म प्रकाश ने सपने को दी आकृति
विकासशील इस देश के अंदर, नहीं थे ये कार्य आसान
लेकिन उन में यह ज्वाला थी, नया रचेंगे हिंदुस्तान

कम्प्यूटर संचार काल है, यह हमारा है अवसर
रोक नहीं सकता कोई, हर कार्य में हम उत्तमतर
चंद्रमा पर लहराए तिरंगा, यह सपना होगा साकार
मंगल बुध भी दूर नहीं हैं, अब मानेंगे हम न हार
इन सपनों के बीच न भूलें, चलना है, मंज़िल है दूर
कठिनाइयाँ आएँगी, मिलकर मुक़ाबला करेंगे हुज़ूर
ईश्वर से बस एक निवेदन, इस 'विद्यार्थी' का अरमान
फिर से कभी न भूलें हम, नारा पुरखों का 'जय विज्ञान'

श्रीधर नारायणन 'विद्यार्थी'